ihm gegründeten Stadt 4,188 (रूप्ति o beide Ausgg.). 5,258. 6,186. Vgl. LIA. 2,411. fgg. 831. 851. fg.

ক্রব N. einer Hölle Buanour, Intr. 201. ক্তরব Viute. 119.

ক্তর (Çabdar.im ÇKDa.) und ক্তর্র (des Metrums wegen) m.N. pr. eines Gandharva. nom. কর্ম MBn. 13,3887. 7639. gen. ক্রিন্ Kathás. 45,351. acc. pl. im comp. ্কর্ন R. 2,91,16 (100,14 Gora.). herzustellen করে: für হুরু: (হুরু) MBn. 1,2559. 3,1769. R. 6,83,18. 92, 70. dagegen ist Mârk. P. 106,57 হুরুম্বি st. ক্রক্মিব zu lesen; auch Taik. 3,5,2 ist হুরুমন্থি: zu lesen.

द्धद्धव s. द्धद्दव.

1. हू rufen s. द्वा.

2. 衰 (= 1. 衰) adj. in इन्द्र ॰, देव ॰, पितृ ॰, मित्र ॰, पाम ॰, सु ॰, सुझ ॰.
3. 衰 interj. आद्धाने, अवज्ञापाम्, अर्ल्कारे und शोके ÇKDa. (nach ÇABDÂRTHAR.). 衰衰 vom Geheul des Schakals VARÂH. Bast. S. 90,1. 12.

Vgl. ह्युव.

ইইইনা(বা) adj. unter den Beiww. Çiva's MBH. 12,10379.

हेंह्नेकारप्रिय adj. desgl. ebend.

हंकर s. कंकर.

हंनार m. = इंनार. हंनार जाल्यास्याला M. 11,204. MBH. 7,1555. HARIV. 12576. 14359. R. 1,41,29. 75,17 (77,20 GORA.). KATHÁS. 4,24. 31,77. 44,152. 50,81. 85. 106,127. 112,192. MARK. P. 86,9. PRAB. 22, 2. Weber, Râmat. Up. 314. fg. नेपि॰ Катна́ड. 45,393. धनुष: Çák. CH. 43,7. vielleicht nur ungenau für इंनार्, wie die v.l. an vielen Stellen hat.

ह्रंकृति f. der Laut beim Schnarchen Spr. (II) 1033. Gesumm: म्रलि-स्वन onlog. 2,9.

হুত্র स्थान n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 340,a, 8. 9. হুত্র মার্হ desgl. ebend. 339,b,22. 39.

ह्रड्, ह्रँडति Daātur. 9,68 (गती).

됐대 m. pl. N. pr. eines Volkes Z. f. d. K. d. M. 2,56. 5,463. fg. LIA. 2,1159, N. 5. Hall in Journ. of the Am. Or. S. 6,528. fg. in der Einleitung zu Vâsavad. 51. VP. 177, N. 6. MBH. 1,6685 (중국 ed. Calc.). 3,1991. 6,373 (ed. Calc. 중국; vgl. VP. 194). R. 4,40,25, v. l. Ragh. 4,68. Mudrâr. 112,1. VP. 2,3,17. Mârk. P. 58,45. Kathâs. 19,111. Ind. St. 8,349. fg. Prab. 87,18. Bhâg. P. 2,4,18. 7,46. 9,20,30. Verz. d. Oxf. H. 339, b,24. 이전되고 Lalit. ed. Calc. 144,1. 중네: oder 존점 Vărâh. Bṛh. S. 14,27. 대접 11,61. 원급 16,38. sg. ein Fürst der Hūṇa Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,504, Çl. 12. N. pr. eines Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352, b, 6. — Vgl. 직접 , 직접 , 직접 ,

ट्टत s. u. द्वा.

हतवत् adj. das Wort हत enthaltend Âçv. Ça. 2,14,19. Çiñeh. Ça. 14,50,10.

ङ्गति (von 1. ङ्क) f. Ruf, Anruf AK. 1,1,5,9. 3,3,8. H. 261. 334. Benennung, Name: द्वीप॰ Bais. P. 5,20,8. — Vgl. देव॰, खुम॰, पुरु॰, पूर्व॰, भर्॰, पाम॰, रुद्र॰, स॰, स॰, स॰, रिस्ति॰.

द्धन s. द्वा.

ह्रम् interj. तर्ने AK. 3,8,18. वितर्ने und प्रम्ने 3,4,89(28),14. Мво. avj. 56. संमती, क्रोधे, भये, निन्दायाम्, श्रवज्ञायाम् Nâsâjaṇaráaesavastin zu AK. nach ÇKDs. Beispiele bei Buasata zu AK. nach ÇKDs.: हं चै- त्रो अपि पाँग्रितः (वितर्के), हं को लङ्काधिपतिः (प्रम्ने), हं कृतं ह्रम् (म्रुनु-मती), हं न गत्तव्यम् (भये). हूँपाउत्ता मल्लाः Verz. d. Oxf. H. 97, b, N. 2. — Vgl. हंकार् und द्धम्.

ह्रय (von 1. ह्र) n. in देव o und पित o.

স্থাব m. Schakal (den Laut স্থ ausstossend) Trie. 2,5,7 (vgl. Corrigg.). H. 1290.

ন্থা m. pl. N. pr. eines Volkes Journ. of the Am. Or. S. 6,529.

HALL in der Einleitung zu Vâsavad. 52. — Vgl. কাক্সা.

ह्या s. हर o, हार o.

हुई (कुई), हुईति (कारित्ये) Duatup. 7,31. P. 8,2,78. schief gehen, gleiten, schwanken, fallen; mit abl. von Etwas abfallen: पत्ताह्र्कृति नास्माखत्ता हुर्कृति प्रदेश. 32,6. — Vgl. द्वार.

— caus. zu Fall bringen, abkommen lassen von (abl.): यं दिज्यातस्य इर्क्यत्, स्वर्गादेवैनं लोकाहुर्क्यति Kâțe. 25, 5.

— अन् nach Jmd zu Fall kommen Karn. 36,1.

— वि watscheln (von einem Fetten): विङ्किक्ति कि न क्यपनाय च न भवति Cat. Ba. 2,4,2,6. schwanken, fehltreten: নাঘুর্ঘিক্লেক্ট্নি य ত্বঁ वेदें Kāṭa. 27,1.

हर्कन n. nom. act. von हर्क् als Bed. von कार Duâtup. 15,47. von धर 22,41. von द्वार 31,21, v. l.

EGUE m. N. pr. eines Schlangendämons Schiefner, Lebensb. 290 (60). 309 (79).

हृष्वप्र s. u. कुष्न.

1. 衰衰 interj. s. u. 3. 衰.

2. হুকু (onomatop.) m. Declination Vop. 3,65. N. pr. eines Gandharva AK. 1,4,4,88. H. 183, Schol. কাকাহুকুন্যা সন্ঘৰ্গান্যান্ Kauç. 56. Hariv. 7225. 9259. 14159. R. 6,82,50. Kathâs. 116,87. Buâc. P. 8,4,3. Vgl. কুকু, wie häufig des Metrums wegen gelesen werden muss.

कृष्टक्ष (कृद् + श्य) 1) adj. im Herzen ruhend: मृति: पुराण: so v. a. das Gewissen Spr. (II) 1438. सर्वभूतानाम् MBH. 13,4031. साधु ° so v. a. die Gedanken Guter beschäftigend BHÂG. P. 7,8,51. — 2) m. a) Geschlechtsliebe (auch der Liebesgott) H. 227. HALÂJ. 1,32. MBH. 3,1860. 2088. ्वर्धन 2154. BHÂG. P. 3,14,7. 6,1,61. जात ° adj. 8,9,2. — b) Wunsch, Verlangen: सर्वाम्मुद्धति कृष्टक्यान् BHÂG. P. 1,6,23. — MBH. 6,4246 schlechte Lesart für स्नुश्य, wie die ed. Bomb. liest.

हृद्ध्य (हृद् + पूल) m. n. Herzweh, viell. Herzkrampf Kabaka 10,2. Sugn. 2,18,13. 463,2. 489,2. Kakrad. 241,6.

व्हट्कोक (व्हर् + शोक) m. Herzenskummer P. 6,3,51.

हृच्हाष (हृद् + शाष) m. Trockenheit des Innern Suça. 2,279,8.

কুন্তা (কুর্+র) adj. im Herzen entstanden, — befindlich H. an. 2, 391. Med. j. 65.

रूपाप्, °यति grollen; partic. रूपाप्येन् प़.v. 1,132,4. — vgl. 2. रूर्, रूपाय् and दुर्रुक्षाय्.

क्षाप् s. इर्क्शाप्.

व्हणिया f. = व्हणीया Rajam. zu AK. 3,3,32 nach ÇKDB.

व्हणीय, ंयते = व्हणाय NAIGH. 2,12, v. l. (für भृणीयते). auch sich schämen (vgl. क्री) gana कार्युद्धि zu P. 3,1,27. व्हणीयमान grollend